OCTOBER TO DECEMBER 2015-16

आगामी तीन माह की गतिविधियां

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	फसल	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	प्याज	भीमा शक्ति	प्याज की उन्नत किस्म का आंकलन	0.4	04
2.	चना, गेहूँ प्याज	जे.जी.-14, रतन भीमा शक्ति	सुनिश्चित सिचाई अंतर्गत सोयाबीन आधार फसल पद्धति का आकलन	2.4	04
3.	गेहूँ	रतन	सेल्फ प्रोपेल्ड वरटीकल कनवेयर रीपर द्वारा गेहूँ की कटाई का आकलन	1.0	05
4.	मछली	कतला,रोहू मृगल	मछली बीज उत्पादन	0.8	09
5.	चना	जे.जी.-14,	चने की इल्लियों के नियत्रण हेतु समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
6.	धान एवं गन्ना	ट्राईकोडर्मा विरडी	धान एवं गन्ना के उप उत्पादो का ट्राईकोडर्मा द्वारा विघटन का आकलन	-	04
7.	चना	जे.जी.-14,	चने में कालर रॉट के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडर्मा के प्रभाव का आकलन	-	04
8.	मुर्गी	कड़कनाथ	बैकयार्ड पद्धति में मुर्गी पालन का आकलन	50 नग	04
9.	बटेर	कुटुरनिक्स कुटुरनिक्स जापोनिका	बैकयार्ड पद्धति में बटेर पालन का आकलन	100 नग	04
योग				5.4	42

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	अरबी	इंदिरा अरबी 1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	04
2.	चना	JG -14	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5	12
3.	गेहूँ	रतन	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5	12
4.	गेहूँ	रतन	सीड कम फर्टी लाइजर द्वारा गेहूँ की बुआई	5	13
5.	मछली	कतला,रोहू मृगल	मिश्रित मछली पालन	1.0	10
6.	मछली	कतला, रोहू मृगल, खाकी कैम्बल	मछली सह बत्तख पालन	1.0	12
7.	गन्ना	CO-86032	लाल सड़न रोग का रसायनिक हवाओं के प्रभाव का प्रदर्शन	5	12
8.	गाय	नीम +करंज तेल	नीम + करंज तेल का बाह्य परजीवी नाशक के रूप में उपयोग का प्रदर्शन	12 पशु	12
9.	अजोला	अजोलापिन्नाटा	अजोला उत्पादन एवं पशु आहार के के रूप में उपयोग का प्रदर्शन	12 पशु	12
	मशरूम	आयस्टर मशरूम	आयस्टर मशरूम उत्पादन तकनीक का प्रदर्शन	50 बैग	05
योग				22.4	104

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	चना	वैभव	चना उत्पादन की उन्नत किस्म का प्रदर्शन	28	70
योग				28	70

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	2	5	90
2.	पौध संरक्षण	2	5	88
3.	उद्यानिकी	2	5	87
4.	मृदा विज्ञान	2	5	86
5.	पशुपालन	2	5	84
6.	मत्स्यकी	2	5	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	2	5	82
योग		14	35	600

विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	विषय	संख्या	लाभार्थी
1.	वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	20	60
2.	केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	80	80
3.	प्रक्षेत्र दिवस	03	300
4.	पशु स्वास्थ्य शिविर	01	100
योग		107	740

बीजोत्पादन कार्यक्रम (रबी 2015 - 16)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	लाभार्थी
1.	चना	JG -14	आधार	3.8
2.	चना	JG -226	आधार	3.6
3.	गेहूँ	रतन	प्रमाणित	2.0
योग				9.4

के कृषकों को प्रशिक्षण

कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला - कबीरधाम (छ.ग.) पिन - 491995
फोन/07741 - 299124
E-mail:kvkkawardha@yahoo.in

बुक पोस्ट
भारत शासन सेवार्थ

प्रति,

श्री/श्रीमती/डॉ. .....

.....

.....

उन्नत कृषि
समृध्द किसान

इंदिरा किसान मितान

इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा, जिला - कबीरधाम (छ.ग.)

अंक-23 त्रैमासिक पत्रिका, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, 2015 वर्ष-8

संपादक मंडल

संपादक मंडल :
डॉ. एस.के.पाटिल
कुलपति,इं.गां.कृ.वि.वि.
रायपुर छ.ग.

मार्गदर्शक :
डॉ. एम.पी.ठाकुर
निदेशक विस्तार सेवाएँ
इं.गां.कृ.वि.रायपुर छ.ग.

प्रेरणा स्त्रोत :
डॉ. अनुपम मिश्रा
आंच.परियोजना निदेशक
जोन - 7 (भा.कृ.अनु.परि.)
जबलपुर

प्रकाशक एवं प्रधान संपादक
डॉ. बी.पी.त्रिपाठी
प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा
जिला - कबीरधाम

संपादक :
डॉ. नूतन रामटेके
पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन

सह संपादक :
इं.टी.एस.सोनवानी
कृषि अभियांत्रिकी
श्रीमती प्रमिला कांत
उद्यानिकी
श्री बी.एस.परिहार
सस्य विज्ञान
कु.मनीषा खापर्डे
मात्स्यकी
श्री वाई.के. कौशिक
कार्यक्रम सहायक
श्रीमती स्वाती शर्मा
कार्यक्रम सहायक

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

माननीय कुलपति इंदिरा गांधी कृषि विश्व वि. द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र-कवर्धा का प्रक्षेत्र भ्रमण

माननीय कुलपति डॉ. एस.के. पाटिल इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा दिनांक 26.09.2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र , कवर्धा का भ्रमण किया गया। इस दौरान उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र में लगाये गये काप कैफेटेरिया जिसमें धान की 16 किस्में, सोयाबीन की –4 तथा गन्ने की –9 किस्मों का अवलोकन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र में बीजोत्पादन कार्यक्रम के अंतर्गत लगाये गये सोयाबीन, धान तथा अरहर की फसलों का अवलोकन किया। मान. कुलपति ने प्रदर्शन प्रक्षेत्र में इंदिरा सोया सीड ड्रील से एवं सोयाबीन की बुवाई, एवं मल्टीकाप सीड ड्रील से सोयाबीन एवं अरहर की अंतर्वती फसलों तथा समन्वित फसल प्रणाली का अवलोकन एवं आगे उत्कृष्ट कार्य हेतु उत्साहवर्धन किया। साथ की साथ मान. कुलपति द्वारा सीताफल वृक्ष का रोपण कर मातृ–बगीचा का शुभारंभ किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र में सेवारत कर्मचारियों का चार दिवसीय प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में कृषि विभाग के सेवारत कर्मचारियों के लिए दिनांक 10.08.2015 से 13.08.2015 तक चार दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. बी. पी. त्रिपाठी ने केन्द्र की गतिविधियों एवं उद्देश्य की विस्तृत जानकारी प्रशिक्षणार्थियों को दी एवं बताया कि इस प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य खरीफ फसलों में फसलों में समन्वित पौध प्रबंधन एवं वैज्ञानिक विधि द्वारा कम लागत में अधिक उत्पादन प्राप्त करना है,इसी तारतम्य में संत कबीर कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र के प्राध्यापको एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे खरीफ फसलों में लगने वाले प्रमुख रोग एवं कीट व्याधि का समन्वित प्रबंधन,खरीफ फसलों में खरपतवार, जल प्रबंधन,उर्वरक,मृदा स्वास्थ्य एवं जैविक खेती, उद्यानिकी फसलों की उत्पादन तकनीक, प्रक्षेत्र योजना एवं प्रक्षेत्र अभिलेख तथा पशुओं में होने वाले संकामक रोग एवं उसका निदान, प्रमुख कृषि यंत्रों की जानकारी के साथ–साथ मछली पालन हेतु तालाब प्रबंधन आदि विषयों की विस्तृत जानकारी श्रव्य एवं दृश्य माध्यम से प्रदान की गयी।

OCTOBER TO DECEMBER 2015-16

विगत तीन माह की गतिविधियां

फल एवं सब्जि प्रसंस्करण पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा में पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन दिनांक 21–25 जुलाई 2015 को कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के प्रशिक्षण हाल मे किया गया। प्रशिक्षण में तीजन बाई स्वसहायता समुह, जय मां दुर्गा एवं मां महामाया स्वसहायता समुह से कुल 30 महिलाओं को आम का जैम बनाने की विधि पर तकनीकी व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण महिलाओं को कृषि के क्षेत्र में स्वावलंबी बनाने में मददगार साबित होगी।

वृहद पौध रोपण कर मनाया हरियर छत्तीसगढ

कृषि विज्ञान केन्द्र, कवर्धा के प्रभारी कार्यक्रम समन्वयक डॉ. बी. पी. त्रिपाठी के मार्गदर्शन में केन्द्र के अधिकारी एवं कर्मचारियों के द्वारा 3 अगस्त हरियर छत्तीसगढ़ अभियान के तहत वृहद वृक्षारोपण किया गया साथ ही साथ पर्यावरण संरक्षित व स्वच्छ रखने की शपथ ली गई। इस तारतम्य में लगभग एक हजार पौधों का रोपण केन्द्र एवं आस–पास के गांव जैसे सोनबरसा, चारभाठा में किया गया तथा पौध संरक्षण पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से वृक्षों की रक्षा व अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने की सलाह दी गई व इनकी उपयोगिता बताई गई।

विस्तार गतिविधियाँ

क्र.	विषय	संख्या	लाभार्थी
1.	वैज्ञानिको का खेतो में भ्रमण	15	30
2.	केन्द्र पर कृषको का भ्रमण	100	100
3.	सब्जी एवं फल प्रसंस्करण प्रशिक्षण	1	30
योग		116	160

बीजोत्पादन कार्यक्रम (खरीफ 2015 - 16)

क्र.	फसल	किस्म	उत्पादित होने वाला बीज प्रकार	रकबा हे.
1.	धान	इंदिरा बारानी धान -1	आधार	1.6
2.	सोयाबीन	जे.एस. -97-52	आधार	4.4
3.	सोयाबीन	जे.एस. -95-7	प्रमाणित	1.2
4.	सोयाबीन	जे.एस. -95-7	प्रजनक	0.8
5.	अरहर	आशा	आधार	2.0
6.	मूंग	HUM-12	प्रजनक	1.8
योग				11.8

प्रक्षेत्र परिक्षण

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	सोयाबीन	जे.एस. -97 -52	इमेजाथाइपर + इमजामाक्स द्वारा खरपतवार प्रबंधन का आकलन	0.8	04
2.	सोयाबीन	जे.एस. -97 -52	सुनिश्चित सिंचाई अवस्था में सोयाबीन आधारित फसल पद्धति का आकलन	0.8	04
3.	धान	-	तना छेदक कीट के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
4.	धान	-	झूठा कंडवा रोग के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
5.	धान	-	झुलसा रोग के समन्वित प्रबंधन का आकलन	0.8	04
6.	प्याज	भीमा डार्क रेड	प्याज की उन्नत किस्म का आकलन	0.8	04
7.	सोयाबीन	जे.एस. -97 -52	रेज्ड बेड प्लांटर द्वारा सोयाबीन की कतार बोनी का आकलन	0.8	04
8.	मछली	रोहू,कतला मृगल	संचय पूर्व तालाब की तैयारी से जिवित्ता पर प्रभाव	1.0	04
9.	धान	-	धान की कतार बोनी में फसल प्रबंधन का आकलन	0.8	04
योग				7.6	36.0

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	धान	इंदिरा बारानी धान -1	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5	12
2.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	5	12
3.	सोयाबीन	जे.एस. 97-52	सीड कम फर्टीलाइजर ड्रील द्वारा सोयाबीन की बुवाई	5	12
4.	जिमीकंद	गजेन्द्र	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	0.4	04
योग				15.4	40

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन (आदिवासी उप परियोजना अंतर्गत)

क्र.	फसल	प्रजाति	प्रयोग की जाने वाली तकनीक	रकबा हे.	लाभार्थी
1.	अरहर	LRG-41	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
2.	उड़द	PU-31	उन्नत किस्म का प्रदर्शन	05	12
योग				10	24

कृषकों एवं कृषक महिलाओं के लिए प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1.	फसल उत्पादन	2	5	90
2.	पौध संरक्षण	2	5	88
3.	उद्यानिकी	2	5	87
4.	मृदा विज्ञान	2	5	86
5.	पशुपालन	2	5	84
6.	मत्स्यकी	2	5	83
7.	कृषि अभियांत्रिकी	2	5	82
योग		14	35	600

अक्टूबर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

* गन्ने की शीतकालीन फसल की बुआई करें।
* रबी दलहनी फसलो के बीजो के बुआई पूर्व कवक नाशी थायरम या साफ सुपर (2.5 ग्राम/किलो बीज) से पहले उपचारित करना चाहिए। तत्पश्चात राइजोबियम जिवाणु कल्चर (10 ग्राम) तथा जैविक नियंत्रणकर्ता संरूप ट्राइकोडर्मा (6–10 ग्राम) प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।
* धान में भूरा माहो के अधिक प्रकोप की अवस्था में इमीडाक्लाप्रिड 17.8 एस.एल.का 125 मि.ली./हे0 की दर से छिड़काव करे अथवा कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण का छिड़काव करें। छिड़काव पौधे के निचले हिस्से में केन्द्रित करें।
* पर्णच्छद विगलन (शीध राट) नियंत्रण हेतु प्रोपिकोनाजोल का (1 मि.ली./ली.)छिड़काव करें।
* तिवड़ा की उन्नत प्रजातियां जैसे – प्रतीक, रतन, महातिवड़ा का उपयोग करें।
* मटर की उन्नत प्रजातियां जैसे – अंबिका,शम्रा, रचना का उपयोग करें।

उघानिकी

* टमाटर, मिर्च, बैगन, प्याज एवं गोभीवर्गीय फसलों की नर्सरी लगाए।
* आलू की बुवाई कार्बेन्डाजिम दवा 2.5–3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 मिनट तक बीजों को उपचारित करें।
* हरी मटर,पालक, मूली, गाजर, धनियां, मेथी आदि की बुवाई करें।
* बगींचे की फसल में सिंचाई करें।
* आम, अमरूद, नीबू,कटहल आदि में खाद की शेष मात्रा डालें।
* आम में गुच्छा रोग की रोकथाम के लिए एन. ए.ए. नामक हारमोन का 200 मि.ली./एकड़ की दर से छिड़काव करें।
* शीतकालीन पुष्पों की बुवाई करें।

पशुपालन

* पशुओं को हरे चारे की उपलब्धता आवश्यक होती है इस हेतु रबी मौसम में हरे चारे वाली फसलों जैसे बरसीम, रिजका, सरसों, जई का उत्पादन करें।
* समान्यतः वर्षा ऋतु समाप्त होने पर पशुओं को धान का पैरा ही खिलाया जाता है जिसका पौष्टिक मान कम होता है इस हेतु दुग्ध उत्पादक पशु एवं खेतीहर पशुओं के आहार में पैरा के साथ–साथ हरे चारे एवं खलियां का भी समावेश किया जाना चाहिए।
* पशुओं को खुरपका मुँहपका तथा गलघोंटू बीमारी से बचाव हेतु टीकाकरण जाड़ा शुरु होने से पहले अक्टूबर – नवम्बर तक करवा लेना चाहिए।

नवम्बर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

* धान के कटाई के उपरांत खेत की संचित नमी के उपयोग हेतु जीरो सीड ड्रिल द्वारा फसलों की बुआई करें।
* धान के कटाई के बाद खेत में संरक्षित नमी में चना, अलसी, मसूर, कुसुम की बुवाई करें।
* चना, मसुर, मटर, सरसों आदि फसलों में नींदा नियंत्रण हेतु बुआई के 3 दिन के अंदर पेन्डीमेथालिन दवा (30 ई.सी.) 750 मि.ली. से 1 लीटर सकिय तत्व (दवा की मात्रा 2. 5–3 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
* अंकुरण पश्चात् संकरी पत्ती वाले खरपतवार अधिक होने पर म्युजेलोफॉप इथाइल नामक दवा का 40–50 मि.ली. सकिय तत्व (दवा की मात्रा 800 कि.ग्रा.से 1 ली.) प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
* गेहूँ की बीजो को कार्बक्सिन+थायरम (2 ग्राम/ किलो) बीजो की दर से उपचारित कर बोयें।
* दलहनी फसलों के उकठा रोग नियंत्रण हेतु निरोधक प्रजातियों का उपयोग करें।
* खड़ी फसल में सिंचाई करें, गन्ने की कतारों के मध्य अंतरवर्ती फसलें जैसे आलू, प्याज, राजमा आदि की बुवाई करें।
* सिंचित अवस्था में गेहूँ, बरसीम, मटर, सरसो, चना, कुसुम, मसूर, अलसी आदि फसलों की बुवाई करें।

उघानिकी

* नर्सरी की पौध में गलन की समस्या की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम दवा 2.5–3 ग्राम को 1 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
* टमाटर, बैगन,प्याज,आदि की नर्सरी तैयार होने पर उसकी रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा का उपयोग करें।
* मटर में पाउडरी मिल्ड्यू की रोकथाम हेतु केराथेन 0.15 प्रतिशत या सल्फेक्स 0.2 प्रतिषत घोल का छिड़काव करें।
* बगीचें के पौधो के थालों की गुड़ाई करें तथा तने पर बोर्डो पेस्ट लगाएं।
* आम, लीची, आंवला आदि पौधों में मिलीबम को पेड़ के उपर चढ़ने से राकने के लिए ग्रीस की पट्टी लगाएं।
* आम के वृक्ष में पुष्प कलिका बनना आरंभ हो गया हो तो सिंचाई बन्द रखें। जिससे फुल अधिक आएंगे।
* पुष्पों के पौधों मे सिंचाई करें।

पशुपालन

* लूसर्न व बरसीम चारे की कटाई जमीन से 10 सेमी. छोड़कर 30–35 दिन के अंतराल पर करें तथा सिंचाई करें।
* पशु नस्ल हेतु वर्षा ऋतु के बाद निकृष्ट सांडो एवं बैलों का बधियाकरण किया जाना चाहिए।

दिसम्बर माह में

फसलोत्पादन एवँ पौध संरक्षण

* गेहूँ की बुवाई पूर्ण करें तथा बुवाई के 20–25 दिन बाद (किरीट जड़ अवस्था) सिंचाई करें।
* गेहूँ की विलंब/देरी से बुआई की दशा में बीज की मात्रा से 20–25 किलो प्रति हे0 की दर से बढ़ा देवें।
* देरी से बुआई हेतु गेहूँ की जी. डब्लू 173, लोक – 1, अरपा, विदिशा, एम.पी.4010 आदि किस्मों का चयन करें।
* गन्ने की कटाई कर पिराई करें अथवा गन्ना कारखाने में भेजें।
* चना, मटर एवं मसूर में दाने भरने की अवस्था पर सिंचाई करें।

उघानिकी

* मिर्च एवं गोभीवर्गीय फसलों के पौध की रोपाई करें तथा खाद की अनुशंसित मात्रा डालें।
* आलु की फसल में निंदाई गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाने का कार्य करें तथा विषाणु जनित रोग के रोकथाम के लिए मिथाइल डेमटान दवा 1 मि. ली./ली. पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
* टमाटर के पौधों में बांस के खम्भें एवं तार के माध्यम से सहारा दें।
* आलू में पछेती झुलसा रोग के लक्षण दिखने पर डायथेन एम–45 दवा का छिड़काव करें, दूसरा छिड़काव 15 दिन के बाद करें।
* आलू में कंद भूमि से बाहर आने से हरापन आ जाता है अतः शीघ्र ही मिट्टी चढ़ाकर ढ़क दें।
* खरबूज, तरबूज, लौकी, करेला, ककड़ी एवं कद्दू लगाने खेतों की तैयारी करें तथा पालिथीन की थैली में बीज की बुवाई करें।
* धनिया, मेथी की फसल पर फफूंद से बचाव हेतु 0.3 प्रतिशत सल्फेक्स का छिड़काव करें।
* मिर्च के चुर्ड़ा–मुर्ड़ा रोग की रोकथाम के लिए मिथाइल डेमेटान कीटनाषक (1 मि.ली. /लीटर पानी) का छिड़काव 10–15 दिन के अंतराल पर करें।
* शीतकालीन मौसमी पुश्पों में सिंचाई एवं उर्वरक प्रबंधन करें।

पशुपालन

* पशुओं को चराई हेतु प्रायः बाहर भेजा जाता है इस हेतु घास पर सुबह ओस खत्म हो जाने के बाद पशुओं को चराना उचित पाया गया है।
* शीत ऋतु में ठंड बढ़ने पर पशु शालाओं में मोटे परदे की व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे रात में ठंड के प्रभाव से पशुओं को बचाया जा सके।
* शीत ऋतु में पशुओं को कभी भी ठंडा चारा, दाना या पानी नही देना चाहिए, क्योकिं इससे पशुओं को ठंड लग जाती है और ठंड का उचित इलाज न होने पर निमोनिया नामक बीमारी हो जाती है।